Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

काव्यस्वरूपविमर्श

डॉ० सूर्यकान्त त्रिपाठी
सहायक आचार्य,
संस्कृत विभाग,
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर,उत्तर प्रदेश, भारत।

शोध आलेख सार– प्रत्येक आचार्य ने वैदिक चिन्तन सरणि को उपन्यस्त किया है। परवर्ती आचार्य पूर्ववर्ती आचार्य की संचेतना के आधार पर प्रतिपादन किया है। सभी आचार्यों ने वाक् को काव्य तथा लोकोत्तराहलाद को असाधारण धर्म के रूप में स्वीकार किया है।

मुख्य शब्द– संस्कृत, वाङ्मय, काव्य,स्वरूप, विमर्श, काव्यशास्त्र, कवि, आचार्य।

संस्कृत वाङ्मय में प्राचीन काल से ही काव्य को परिभाषित करने की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। काव्य की परिभाषा आचार्यों द्वारा युगानुकूल रचनाधर्मिता के आधार पर प्रणीत एवं परिमार्जित होती रही है।

'कवेः कर्म भाव वा काव्यमिति' अर्थात् कवि का कर्म या भाव काव्य कहलाता है। इसीलिए मम्मट ने लोकोत्तरवर्णनानिपुणकविकर्म को काव्य कहा है। काव्य–स्वरूप के सम्बन्ध में वैदिक ऋषि कहता है–

मधुमद्वचोऽशंसीत् काव्यः कविः।

अस्माइत्काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम्।[1]

वैदिक ऋषि मधुरा वाक् को काव्य स्वीकार करता है। इस प्रकार काव्य स्वरूप का उत्स वेद में मिलता है। प्रो० रहस बिहारी द्विवेदी जी ने अपने ग्रन्थ काव्याधिकरणानुभूति विमर्श में लिखते है–

विश्वस्य प्राचीनतमे ग्रन्थे ऋग्वेदे कविवाग्वैशिष्ट्यं वा कण्ठत उपात्तीकृतं प्राप्यते।

मधुमद्वचः इत्यत्र काव्याधिकरणं वचः तद्वैशिष्ट्´च मधुमत्।[2]

इस प्रकार ऋषि काव्य के अधिकरण वाक् पर सर्वप्रथम विचार उपस्थापित करता है। असाधारण धर्म कथन रूप विशेषण मधुमद् का प्रयोग ऋषिकरता है। मधुमद् का अभिप्राय लोकोत्तराहलाद समझना चाहिए। प्रायशः सभी आचार्यों ने असाधारण धर्म के रूप में लोकोत्तराहलाद को स्वीकार किया है।

काव्यशास्त्र के पुरोधा आचार्य भामह काव्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं–

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।[3]

भामह इस परिभाषा के माध्यम से काव्य के वाह्य स्वरूप पर ही विचार कर रहे हैं। लक्षण में असाधारण धर्म होना अपरिहार्य है जिसका अभाव यहाँ परिलक्षित हो रहा है। भामह के समय में शब्दालंकार और अर्थालंकार के महत्त्व को लेकर खींचातान थी। ऐसा प्रतीत होता है कि भामह समन्वय स्थापित करने के लिए आपाततः इस लक्षण को रखा है। जैसा कि प्रो० रहस विहारी द्विवेदी कहते हैं–

''भामहस्यात्र तात्पर्यं यच्छब्दालङ्कारार्थलङ्कारसहितौ काव्यं भवति तत्र कस्यचिदेकेस्य महत्त्वं नास्ति।''[4] भामह के द्वारा वक्रता को काव्य का अन्तस्तत्त्व स्वीकार किया गया है। काव्य के स्वरूप के सन्दर्भ में भामह कहते हैं– **वक्राभिधेय शब्दोक्तिरिष्टावाचामलङ्कृतिः।**[5] इस प्रकार भामह भी काव्य के अधिकरण के रूप में वाक् को स्वीकार करते हैं। भामह ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ वाक् के स्थान पर काव्य शब्द का प्रयोग किया है–

शब्दश्छन्दोऽभिधानार्था इतिहासाश्रयाः कथा

लोकोयुक्तिकलाश्चेति मन्तव्या काव्यवैखरी।।[6]

इस प्रकार भामह वाक् और काव्य में भेद स्वीकार नही करते।

आचार्य दण्डी ने स्वीकीय काव्यलक्षण में पद शब्द का प्रयोग किया है न कि शब्द का–

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।[7]

दण्डी ने वाक् के स्थान पर पदावली का प्रयोग किया है। प्रो० रहस बिहारी द्विवेदी इसका समर्थन करते हुए लिखते हैं– **एवं वाचः स्थाने पदावली, वाक्यंवा**

काव्यलक्षणेंऽधिकरणरूपेण कथनं नानुचितम्।[8] वाक् कहने से, परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा बैरवरी चारों का परिगणन हो जाता है। वेद भी इसी का समर्थन करता है–

चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुब्राह्मणा ये मनीषिणः।

गुहात्रीणि निहितानेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।[9]

वाक् के अन्तर्गत चारों वाणियाँ गृहीत है इस आधार पर भर्तृहरि का शब्द ब्रहमत्व भी आचायों के द्वारा स्वीकृत है–

अनादि निधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।

विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः।।[10]

यही कारण है कि वैदिक ऋषि ने वाक् को काव्य स्वीकार किया है। वाक् शब्द का मूल रूप है। मनुष्य में यह संस्कार रूप में विद्यमान रहता है।

ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य आनन्दवर्धन काव्य स्वरूप के सन्दर्भ में प्राचीन आचार्यो के मत के विषय में कहते हैं– शब्दार्थ शरीरं तावत् काव्यम्। अपना काव्य स्वरूप इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

सरस्वती स्वादुतदर्थ वस्तु निष्यन्दमाना महतां कवीनाम्।

अलोकसामान्यमभिव्यनक्ति परिस्फुरन्तं प्रतिभाविशेषम्।।[11]

इस प्रकार 'सरस्वती' पद के द्वारा आनन्दवर्धन वाक् को ही काव्य का अधिकरण स्वीकार कर रहे हैं क्योंकि वाक् के समानार्थक शब्दों में सरस्वती भी है–

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वांग्वाणी सरस्वती।

व्यावहार उक्तिर्लपितं भाषित वचनं वचः।।[12]

'आलोकसामान्यमभिव्यनक्ति' कहकर काव्य के असाधारण धर्म लोकोत्तराहलादजनकता को प्रतिपादित कर रहे हैं।

वामन भी **काव्यशब्दोऽयं गुणालंकारसंस्कृतयोः**[13] **शब्दार्थयोर्वर्तते** कहकर शब्द के माध्यम से वाक् को ही कह रहे है तथा वाक् को काव्य के अधिकरण के रूप में स्वीकार कर रहे है। वामन ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ का विभाजन भी अधिकरण में करते हैं।

आचार्य मम्मट काव्य का अधिकरण कवि भारती अर्थात् वाक् को स्वीकार करते हैं–

नियतिकृतनियमरहितामाहलादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।

नवरसरूचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।।[14]

यहाँ पर आदधती क्रियाविशेषपण के आधार पर यहा कहा जा सकता है। कि कविवाक् को मम्मट काव्य का अधिकरण स्वीकार करते हैं।

'लोकोत्तरवर्णनानिपुणकविकर्मकाव्यमिति' कहकर काव्य के असाधारणधर्मत्व लोाकेत्तराहलादजनकता को भी विवेचित कर रहे हैं।

इस प्रकार मम्मट काव्य के अधिकरण तथा असाधारण धर्म का सम्यक् रूप से विचार कर सामान्यतः काव्यस्वरूप कहते हैं–

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।[15]

पण्डितराज जगन्नाथ काव्य स्वरूप को बतलाते हुए कहते हैं–

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।[16]

आगे रमणीयता को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं–

रमणीयता च लोकोत्तराहलादजनक ज्ञानगोचरता।

काव्यस्वरूप प्रतिपादन में पण्डित राज जगन्नाथ भामह का अनुवर्तन कर रहे हैं।

वक्राभिधेयशब्दोक्तिरिष्टावाचामलंकृतिः।

आचार्य कुन्तक भी वाक् को काव्यका अधिकरण तथा लोकोत्तराहलाद जनकता को असाधारण धर्म के रूप में स्वीकार करते है। लोकोत्तराहलाद को काव्य का अन्तस्तत्त्वं स्वीकार करते हैं–

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।

बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाहलादकारिणि।[17]

कुन्तक ने भी भामह का अनुवर्तन किया है। लोकोतिक्रान्तगोचर शब्द के स्थान पर लोाकोत्तर चमत्कार का प्रयोग करते हुए लिखा है–

लोकोत्तरचमत्कारकारिवैचित्र्यसिद्वये।

काव्यस्यामलङ्कारः कोऽव्यपूर्वो विधीयते।।[18]

इस प्रकार भामह काव्यशास्त्र जगत् में पुरोधा आचार्य के रूप में समादृत है। प्रत्येक परवर्ती आचार्य उनकी काव्यशास्त्र विषयक संचेतना से लाभान्वित हुआ है।

सभी आचार्यों के काव्यलक्षण को यहाँ उपस्थापित करना सम्भव नहीं है अतः प्रमुख आचार्यों के अभिमत पर समीक्षा रखी गयी है।

आज भी काव्यशास्त्र पर गंभीर चिन्तन प्रवहमान है। कुछ आधुनिक आचार्यों के मन्तव्यों को यहाँ उपस्थपित किया जायेगा।

प्रो० राधा बल्लभ त्रिपाठी काव्य स्वरूप को बतलाते हुए कहते हैं–

लोकानुकीर्तनम्काव्यम्।।[19]

प्रो० त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत काव्यलक्षण भरत के काव्यलक्षण 'भावानुकीर्तनम् काव्यम्' का अनुकरण है।

प्रो० राजेन्द्र मिश्र ध्वनिवादी आचार्य हैं। प्रो० मिश्र परम्परा के प्रति आस्थालु हैं। प्रो० मिश्र का काव्य लक्षण है–

काव्यं लोकोत्तराख्यानं रसगर्भ स्वभावजम्।

परत्रेह च निर्व्याजं यशोऽवात्ति प्रयोजनम्।।[20]

प्रो० मिश्र के काव्यलक्षण में मम्मट का प्रभाव– दृष्टिगोचर होता है–

प्रो० रहस बिहारी द्विवेदी जी ने वेद को आधार मानकर परम्परा का अनुवर्तन करते हुए काव्यलक्षण प्रस्तुत किया है–

लोकोत्तरह्रदाहलादे लोकोद्बोधे च संगता।

प्रज्ञावतः कवेः सद्वाक् काव्यमित्यभिधीयते।[21]

इस प्रकार प्रो० द्विवेदी वाक् को काव्य तथा लोकोत्तराहलादजनकता को असाधारण धर्म स्वीकार करते है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रत्येक आचार्य ने वैदिक चिन्तन सरणि को उपन्यस्त किया है। परवर्ती आचार्य पूर्ववर्ती आचार्य की संचेतना के आधार पर प्रतिपादन किया है। सभी आचार्यों ने वाक् को काव्य तथा लोकोत्तराहलाद को असाधारण धर्म के रूप में स्वीकार किया है।

काव्यशास्त्र में सम्प्रदाय शब्द समीचीन नहीं है। सम्प्रदाय के स्थान पर सिद्धान्त शब्द उचित प्रतीत होता है। प्रो० रहस बिहारी द्विवेदी इस सन्दर्भ में कहते हैं–

'विदेशी लेखकों से प्रभावित विशेष रूप से हिन्दी में काव्यशास्त्र के परिचायक ग्रन्थ लिखने वाले विद्वानों ने स्कूल शब्द का सम्प्रदाय अनुवाद कर दिया।''[22]

सम्प्रदाय शब्द से संकीर्णता द्योतित होती है।

लोकोत्तराहलाद समुद्र की भाँति है तथा ये सभी प्रस्थान नदियों की भाँति। सबका गन्तव्य एक है। जैसा कि प्रो० द्विवेदी कहते हैं।

रसोऽलङ्काररीती च ध्वनिर्वक्रोक्तिरौचिती।

यान्ति लोकोत्तराहलादमर्णवं सरितो यथा।[23]

सभी आचार्यो ने मूल की प्रतिष्ठा की दृष्टि से अपने–अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में काव्यस्वरूप विषयक मौलिक अवधारणाओं को उपस्थापित कर साहित्य– शास्त्रीय परम्परा को परिपुष्ट एवं परिवर्धित किया है। जैसाकि अभिनव गुप्त पादाचार्य कहते हैं–

तस्माद्सतां अत्र न दूषितानिमतानि तान्यवे तु शोधितानि।

पूर्वप्रतिष्ठाापित योजनासु मूलप्रतिष्ठाफलमानननन्ति।।[24]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद– 8.8.11, 5–39–5

2. काव्याधिकरणानुभूतिविमर्श प्रो० रहस बिहारी द्विवेदी पृ०1

3. काव्यालंकार– 1/1

4. काव्याधिकरणानुभूति विमर्श– पृ० 7

5. काव्यालंकार

6. काव्यालंकार 1/क

7. काव्यादर्श 1/1

8. काव्याधिकरणानुभूतिविमर्श पृष्ठ 13

9. ऋग्वेद – 1/64–45

10. वाक्यपदीय 1/1

11. ध्वन्यालोक 1/6

12. अमरकोष

13. काव्यालंकारसूत्र – प्रथम अध्याय

14. काव्यप्रकाश–मंगलाचरण

15. काव्यप्रकाश – सूत्र 1 (काव्य लक्षण)

16. रस गंगाधर (काव्य लक्षण)

17. वक्रोक्तिजीवितम्–1/7

18. वक्रोत्तिजीवितम् – 1/2

19. अभिनव काव्यालंकार सूत्र – 1–1–1

20. अभिराजयशोभूषणम् – (काव्यलक्षण)

21. काव्याधिकरणानुभूतिविमर्श

22. काव्याधिकरणानुभूतिविमर्श–3

23. काव्याधिकरणानुभूतिविमर्श –3 पृष्ठ 25

24. अभिनवभारती पृष्ठ 25